

बिहार की संगीत परंपरा: एक अवलोकन

डॉ० प्रियंका कुमारी

संगीत शिक्षक, उच्च माध्यमिक विद्यालय, थरुआही, लौकही, मधुबनी

शोध सार:-

भारतीय संस्कृति में संगीत का स्थान सदैव महत्वपूर्ण रहा है। गायन, वादन और नृत्य का संगम इसे मनोरंजन के साथ-साथ सृजनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम बनाता है। बिहार की भूमि प्राचीन काल से ही सांगीतिक परंपरा की धुरी रही है। नालन्दा, विक्रमशीला और उदन्तपुरी जैसे विश्वविद्यालयों में संगीत के स्वतंत्र संकाय इसकी गौरवपूर्ण परंपरा का प्रमाण हैं। शास्त्रीय संगीत में बिहार की विशेष पहचान ध्रुपद, धमार, ख्याल और ठुमरी परंपरा से रही है। मिथिला के शासक नान्यदेव कृत सरस्वती हृदयालंकार तथा पं. लोचन की रागतरंगिणी जैसे ग्रंथ इस धरोहर को समृद्ध करते हैं। दरभंगा, डुमरांव और बेतिया घरानों ने ध्रुपद परंपरा को उच्च स्थान दिलाया, जिसमें मल्लिक परिवार का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा। गया एवं पटना ख्याल और ठुमरी के प्रमुख केंद्र रहे, जिनमें मौजुदीन खां, सियाराम तिवारी तथा नाहर परिवार का योगदान अविस्मरणीय है। वाद्य संगीत में पखावज, सितार और हारमोनियम वादन की सशक्त परंपरा विकसित हुई। बिहार में कथक, भरतनाट्यम और ओडिसी जैसे शास्त्रीय नृत्य भी फले-फूले। साथ ही चैती, कजरी, दादरा और लोकनृत्य-लोकगीतों ने लोकसंस्कृति को जीवंत बनाए रखा। आज यद्यपि पारंपरिक आयोजनों की परंपरा क्षीण हो चुकी है, परंतु संगीत विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से यह विरासत जीवंत है। इस प्रकार बिहार की सांगीतिक धरोहर भारतीय संस्कृति का गौरवशाली अध्याय है।

मुख्य शब्द -बौद्ध, जैन, मगध, बिहार, संगीत, गायक घराना, ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी, दादरा, मार्गी एवं देशी संगीत इत्यादि।

प्रमुख कलाकार- क्षितिपाल मल्लिक, भैया लाल पखावजी, पद्मश्री राम चतुर मल्लिक, पद्मश्री सियाराम तिवारी, रामजी, कामेश्वर पाठक, अभय नारायण मल्लिक, पन्ना लाल उपाध्याय, श्यामनारायण सिंह, डॉ. नागेन्द्र मोहिनी, अरुण कुमार भास्कर इत्यादि।

मूल आलेख

भारतीय संगीत कला आदि काल से भारत की समस्त कलाओं में एक उच्च स्थान प्राप्त करती आ रही है। संगीत, जिसमें गायन, वादन एवं नृत्य तीनों का समावेश होता है। किसी भी क्षेत्र के सांस्कृतिक जीवन की पहचान में संगीत का महत्व सभी संस्कृतियों में निर्णायक रहा है। यह एक ओर मनोरंजन का साधन है, तो दूसरी ओर सृजनशील अभिव्यक्तियों का माध्यम है। बिहार में संगीत का स्थान महत्वपूर्ण है। महाभारत काल, रामायण काल, बौद्ध और जैन काल से लेकर वर्तमान समय तक संगीत के कई उतार-चढ़ाव देखे जाते हैं। मगध (वर्तमान बिहार) प्राचीन समय से ही संगीत का केन्द्र-बिन्दु रहा है। नालन्दा विश्वविद्यालय, विक्रमशीला विश्वविद्यालय, उदन्तपुरी विश्वविद्यालय में संगीत के स्वतंत्र संकाय हुआ करते थे। बुद्ध के समय से राजगीर, वैशाली, गया, पाटलीपुत्र जैसे नगरों में गायक, गायिकाओं, नर्तकियों एवं गणिकाओं की उपस्थिति के साक्ष्य मिलते हैं। बिहार

में सूफी संतों के माध्यम से संगीत की प्रगति हुई, जबकि वैष्णव धर्म आंदोलन के माध्यम से नृत्य और संगीत दोनों का विकास हुआ। वर्तमान समय में गायन, वादन, नृत्य एवं लोकसंगीत की परंपरा कायम है।

भारतीय संस्कृति की प्राचीन भूमि बिहार की सांगीतिक सम्पदा गौरवपूर्ण, वैभवयुक्त और समृद्धशाली रही है। शास्त्रीय संगीत में बिहार की विरासत ध्रुपद, धमार, ख्याल और ठुमरी उल्लेखनीय है। भारतीय शास्त्रीय संगीत का इतिहास ध्रुपद से अविच्छिन्न रूप में जुड़ा हुआ है। बिहार में मुख्यतः मिथिला के शासक एवं टेकारी महाराज बड़े संगीतानुरागी थे। मिथिला के कर्णाटवंशीय राजाओं का शासन 1097 से 1324 ई. तक रहा। प्रथम शासक थे नान्यदेव और अंतिम हरिसिंह देव थे। नान्यदेव रचित सरस्वती हृदयालंकार भारतीय संगीत शास्त्र का एक मूल्यवान ग्रंथ है। पटना के मो. रजा ने नागमते-आसफी नामक पुस्तक की रचना की, जो संगीत की एक बहुमूल्य पुस्तक है। भारतीय संगीत का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है लोचनकृत रागतरंगिणी। इसकी रचना पं. लोचन ने 1685 ई. के आसपास की थी। यह ग्रंथ संस्कृत में है और मिथिला की संगीत परम्परा का प्रामाणिक इतिहास भी माना जाता है। आगे चलकर इस गायन परंपरा में घनश्याम मल्लिक नामक गुणी गायक हुए, जिनके सभी संतान शास्त्रीय संगीत के गायक थे। मल्लिक-परिवार द्वारा तिरहुत गीत का प्रचार निरंतर होता रहा, जो आज मिथिला के जनजीवन में प्रवाहित है। पं. लोचन ने इस ग्रंथ में 'तिरहुत' गीत का उल्लेख करते हुए 'मार्गी' एवं 'देशी' संगीत की सुन्दर व्याख्या की है।

बिहार में ध्रुपद के तीन प्रमुख केन्द्र रहे हैं अमता (दरभंगा), डुमरांव (भोजपुर) और बेतिया (पश्चिमी चंपारण)। अमता घराने के संस्थापक थे भातृद्वय राधाकृष्ण-कर्ताराम। इन दोनों भाइयों ने वर्षों तक सेनिया घराना के महान गायक भूपत खां से ध्रुपद गान की शिक्षा प्राप्त की थी। भूपत खां, न्यामत खां सदारंग के भतीजे और फिरोज खां अदारंग के भाई थे। तीन पीढ़ियों के बाद भारतीय संगीताकाश में ध्रुपद के धूमकेतु पद्मश्री (स्व.) पं. रामचतुर मल्लिक का उदय हुआ। उन्होंने संगीत की शिक्षा अपने ममेरे भाई पं. क्षितिपाल मल्लिक से प्राप्त की थी। राजित रामजी एवं पं. क्षितिपाल मल्लिक की छत्रछाया में रामचतुर मल्लिक का सांगीतिक विकास हुआ। पं. क्षितिपाल मल्लिक के तीनों पुत्र नरसिंह मल्लिक (लाल बाबू), महावीर मल्लिक एवं यदुवीर मल्लिक ध्रुपद के अच्छे गायक थे। अमता में ध्रुपदगायन के साथ-साथ पखावज वादन की कला भी विकसित हुई। जब क्षितिपाल मल्लिक दरभंगा में थे, तो दरभंगा महाराज के दरबार में भैयालाल पखावजी सबसे अधिक प्रतिष्ठित थे। उनके प्रमुख शिष्यों में पं. विष्णुदेव पाठक (अमता) और आरा के जमींदार रईस श्री शत्रुंजय प्रसाद सिंह उर्फ ललन बाबू थे। अमता घराने के ध्रुपद गायकों में कुछ प्रमुख नाम हैं श्री बिदुर मल्लिक, प्रेम कुमार मल्लिक, अभय नारायण मल्लिक और पखावज वादकों में सर्वश्री चन्द्रकुमार मल्लिक, रामाशीष पाठक, उदय कुमार मल्लिक आदि। अमता की दीर्घकालीन ध्रुपद परम्परा आज भी जीवंत रूप में है।

बिहार का दूसरा प्रमुख ध्रुपद घराना डुमरांव का है। डुमरांव महाराज के दरबार में सुप्रसिद्ध गायक घनारंगजी थे, जो उच्च कोटि के कवि एवं संगीत-रचनाकार थे। इनके अतिरिक्त अन्य विद्वान गायक हुए बच्चू मल्लिक, विश्वनाथ पाठक, सहदेव मल्लिक इत्यादि। बिहार में संगीत का बेतिया घराना भी काफी महत्वपूर्ण है। महान सेनिया घराना के संगीतकार प्यारे खां, जो ध्रुपद और रबाब के विशेषज्ञ थे, बेतिया दरबार में आकर स्थायी रूप से रहे। बेतिया के महाराज आनन्द किशोर एवं नवल किशोर स्वयं ध्रुपद के उच्च कोटि के रचनाकार थे। इस घराने के कुछ गायक आज पुनः अपने पूर्वजों की कला-विद्या को जागृत करने में प्रयत्नशील हैं।

गया के समीप एक गांव है इशरपुर एवं पवाई जिसे टेकारी महाराज ने मल्लिक परिवारों को बसाया था। वहां मल्लिक परिवारों में अच्छे गायक-वादक हुए, जिनमें पं. राम गोविन्द पाठक (सितार वादक) एवं पं. वासुदेव उपाध्याय (पखावज वादक) का नाम उल्लेखनीय है। पाठक जी और उनके सुपुत्र श्री बलराम पाठक एक कुशल सितार वादक के रूप में देशभर में सुविख्यात थे। पं. वासुदेव उपाध्याय पखावज के सिद्धहस्त वादक थे। उनके दो सुपुत्र स्व. बलदेव उपाध्याय एवं श्री रामजी उपाध्याय और पौत्र स्व. पन्नालाल उपाध्याय एवं मदन मोहन उपाध्याय (तबला वादक) अपने परिवार की विरासत को कायम रखने में सफल रहे हैं।

ध्रुपद के अतिरिक्त बिहार में ख्याल एवं ठुमरी की विशेषता रही है। गया एवं पटना इसका मुख्य केन्द्र रहा है। ख्याल गायकों में पं. चक्रधर मिश्र (बड़हिया घराना), पं. रामप्रकाश मिश्र, पं. श्यामदास मिश्र, संगीत कुमार नाहर आदि का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। गया शैली की ठुमरी मूलतः पूरब की ठुमरी है। इसमें चार संगीतकारों का महत्वपूर्ण योगदान है गनपतराव भैया साहब (हारमोनियम वादक), मौजुदीन खां, जगदीप मिश्र (रामजी) एवं बाबू सोहनी सिंह। अप्रतिम ठुमरी गायक मौजुदीन खां, भैया साहब के प्रिय शिष्य थे। उधर, गया निवासी सोनी बाबू भैया साहब की अनूठी हारमोनियम वादन शैली से प्रभावित होकर स्वयं हारमोनियम वादक के रूप में उभरे। गया की ठुमरी की चर्चा होने पर कई नाम आते हैं नकफोफा, मुनीश्वर दयाल, स्व. जयराम तिवारी, स्व. पं. कामेश्वर पाठक, पं. गोवर्धन मिश्र, राजेन्द्र सिजुआर और गया की तवायफें, जिन्होंने ठुमरी को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मिथिलांचल क्षेत्र में मांगन खवास एवं चंद्रशेखर खां (वनगांव, सहरसा) सिद्धहस्त ठुमरी गायक थे। उनकी प्रशंसा बेगम अख्तर ने भी की थी।

पं. सियाराम तिवारी मूलतः ध्रुपद, धमार के असाधारण गायक थे और धमार-गायन पर उनका असाधारण अधिकार था। साथ ही, गया शैली की ठुमरी को जिस प्रकार वे प्रस्तुत करते थे, श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाते थे। बुजुर्ग एवं अनुभवी हारमोनियम वादकों की परम्परा में लोहानीपुर (पटना) के श्यामनारायण सिंह, जो पं. केशों महाराज (पटना) के प्रिय शिष्य थे, उल्लेखनीय हैं। उन्होंने भारत के सभी विख्यात कलाकारों के साथ हारमोनियम वादन किया और बिहार का नाम रोशन किया। सांस्कृतिक केन्द्र मुजफ्फरपुर एवं भागलपुर के नाहर परिवार के गायकों एवं वादकों ने बिहार की संगीत परंपरा को बढ़ाने में अविस्मरणीय योगदान दिया है।

बिहार में गायन, वादन के साथ-साथ यहाँ शास्त्रीय नृत्यों की भी परम्परा रही है। बिहार में भरतनाट्यम, कथक एवं ओडिसी नृत्य के भी कलाकार रहे हैं। अरुण कुमार भास्कर (भरतनाट्यम), डॉ. नागेन्द्र मोहनी (कथक नृत्य) एवं मधुकर आनंद (कथक नृत्य) का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। यहाँ लोकसंगीत, लोकनृत्य एवं लोकगाथा की भी वृहत परंपरा रही है। पटना में ख्याल, ठुमरी, दादरा, कजरी, चैती आदि की परंपरा रही है। पटना के नवाबों ने भारतीय संगीत को संरक्षित रखा और पटना सिटी की तवायफों ने भारत के विभिन्न मंचों पर अपनी कला का प्रदर्शन किया। पटना सिटी के जमींदारों एवं नवाबों द्वारा शादी-विवाह एवं अन्य अवसरों पर तवायफों द्वारा कई दिनों तक लगातार संगीत समारोह आयोजित होने का प्रमाण मिलता है।

पटना की पावन भूमि पर दुर्गा पूजा के अवसर पर लंगरटोली (भारत माता मंडली), गांधी मैदान, मुसल्लहपुर हाट, पटना जंक्शन आदि स्थानों पर सांस्कृतिक संस्थाओं, संगीत मर्मजों एवं संगीत-प्रेमियों द्वारा भारत के विभिन्न क्षेत्रों से प्रख्यात कलाकारों को आमंत्रित किया जाता था और कई दिनों तक शास्त्रीय संगीत एवं शास्त्रीय नृत्यों का आनंद लिया जाता था। यह सिलसिला कई वर्षों तक चलता रहा, लेकिन आज यह परंपरा विलुप्त हो गई है।

वर्तमान समय में संगीत विद्यालय, महाविद्यालय, शिक्षण संस्थान, आकाशवाणी एवं दूरदर्शन आदि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से बिहार की संगीत परंपरा को आगे बढ़ाया जा रहा है।

निष्कर्ष:

बिहार की सांगीतिक परंपरा भारतीय संस्कृति का एक अमूल्य एवं गौरवपूर्ण अध्याय है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक इस प्रदेश ने संगीत के विविध रूपों ध्रुपद, धमार, ख्याल, ठुमरी, लोकसंगीत और नृत्य को संरक्षण और संवर्धन दिया है। नालन्दा, विक्रमशीला और उदन्तपुरी जैसे विश्वविद्यालयों में संगीत का स्वतंत्र अध्ययन होना इस क्षेत्र की समृद्ध सांगीतिक परंपरा का प्रमाण है। मिथिला, दरभंगा, डुमरांव और बेतिया जैसे घरानों ने ध्रुपद परंपरा को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई। मल्लिक परिवार, नाहर परिवार और गया की ठुमरी परंपरा ने बिहार को भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रमुख केंद्रों में स्थापित किया। वाद्य संगीत में सितार, पखावज और हारमोनियम वादन की परंपरा ने संगीत को नई ऊँचाइयाँ दीं। साथ ही, भरतनाट्यम, कथक और ओडिसी जैसे शास्त्रीय नृत्य तथा चैती, कजरी, दादरा और लोकनृत्य-लोकगीतों ने लोकसंस्कृति को जीवंत बनाए रखा। यह दर्शाता है कि बिहार की सांगीतिक धरोहर केवल शास्त्रीय परंपरा तक सीमित नहीं रही, बल्कि लोक जीवन की आत्मा से भी गहराई से जुड़ी रही है। यद्यपि वर्तमान समय में पारंपरिक आयोजनों की परंपरा कुछ कम हो गई है, फिर भी संगीत विद्यालयों, विश्वविद्यालयों, आकाशवाणी, दूरदर्शन और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से इस सांगीतिक विरासत का पुनर्जीवन हो रहा है। अतः बिहार की सांगीतिक संपदा भारत की सांस्कृतिक धरोहर में अनमोल स्थान रखती है और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बनी रहेगी।

सन्दर्भ सूची:-

1. सिंह, गजेन्द्र नारायण। बिहार की संगीत परंपरा।
2. मिश्र, शम्भुनाथ। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना-परम्परा।
3. सहाय, डॉ. रीना। पं. लोचन कृत राग तरंगिनी।
4. सिन्हा, पं. राज किशोर प्रसाद। संगीत रचना रत्नाकर, भाग-3।
5. सिंह, डॉ. विजय कुमार। शोध-प्रबंध।